INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(1): 10-12
Received: 05-11-2019
Accepted: 07-12-2019

कल्पना कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
कल्पना कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

बिहार का क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और आधुनिक शिक्षा

कल्पना कुमारी

सारांश
बिहार का इतिहास हमेशा गौरवशाली रहा है। प्राचीन काल से ही यह सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक चेतना का केन्द्रबिन्दु रहा है। चन्द्रगुप्त, अशोक तथा शेरशाह – जैसे राजनायक और गुरू गोविन्द सरीखे धर्मगुरू बिहार की मिट्टी से ही पैदा हुए। गौतम बुद्ध तथा महावीर को ज्ञान–दीप्ति बिहार से ही मिली, जिसके फलस्वरूप उनका धर्म दुनिया के कोने–कोने तक पहुँचा। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में उसकी शिक्षा पद्धति का बहुत बड़ा भाग होता है। शिक्षित वर्ग ही राष्ट्र के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज का नेतृत्व करता है और उसकी प्रगति या अवनति के लिए उत्तरदायी होता है। भारत में भी आधुनिक शिक्षा का भारतीय समाज और राष्ट्र पर प्रभाव स्पष्ट है और यह कहना अनुचित नहीं है कि भारत का नव जागरण आधुनिक शिक्षा पद्धति और उसके नवीन आदर्शों के कारण ही संभव हुआ है। बंगाल में भारत में प्रत्यक्ष अंग्रेजी शासन का आरंभ हुआ। परन्तु एक लंबे समय तक कंपनी के डायरेक्टरों ने भारतीयों की शिक्षा के लिए कोई भी कदम उठाना अपना उत्तरदायित्व नहीं माना। जो कुछ भी प्रयत्न हुआ वह भारत में निवास करने वाले अंग्रेज अधिकारियों के प्रयत्नों से हुआ।

भूमिका
1857 ई० की क्रांति में भी बिहार का प्रमुख योगदान रहा। क्रान्ति की प्रथम चिनगारी को प्रज्वलित करनेवाला बहादुर सिपाही मंगल पांडे बिहार (शाहाबाद) के ही निवासी था। जगदीशपुर के बाबू कुंवर सिंह तथा उनके छोटे भाई बाबू अमर सिंह ने इस संग्राम में अपने पराक्रम का अपूर्व परिचय दिया। पटना, गया, सारण, मोतिहारी तथा मुजफ्फरपुर के लागों की भी इस क्रांति में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यद्यपि 1857 ई० का विद्रोह असफल रहा, फिर भी राजनीतिक चेतना के विकास में यह काफी सहायक सिद्ध हुआ।
इस समय वहाबी आंदोलन एक धार्मिक आंदोलन था, फिर भी इसका राजनीतिक उद्देश्य भारत को अंग्रेजी सत्ता से मुक्त करना था। आंदोलन के नेताओं के अनुसार अंग्रेजों द्वारा शासित होना इलाम धर्म के खिलाफ था। विद्रोह के समय सरकार को यह शक था कि पटने के वहाबी नेताओं का भी षड्यंत्र में हाथ है, इसलिए पटने के आयुक्त टेलर ने फिर पटना के प्रमुख वहाबी नेताओं–मौलवी मुहम्मद हुसैन, मौलवी अहमदुल्ला तथा बैजुल हक को गिरफ्तार कर लिया। जिसमें अहमदुल्ला तथा अन्य नेताओं पर मुकदमा चला तथा अहमदुल्ला को निर्वासन की सजा मिली। फिर भी गुप्त रूप से यह आंदोलन चलता रहा। क्रांतिकारी संगठन के विकास में छोटानागपुर के बिरसा आंदोलन ने भी काफी योगदान दी। आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक बुराईयों को दूर करना तथा विदेशी शासन को समाप्त करना था। यह आंदोलन सरकार द्वारा दबा दिया गया। बिरसा मुण्डा तथा उनके अनुयायियों को गिरफ्तार कर प्रत्येक को दो–दो वर्ष के सश्रम कारावास की सजा दी गई।
अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार द्वारा भी राष्ट्रीय भावना को बल मिला। अंग्रेजी भाषा जब शिक्षा का माध्यम बन गई, तब भारत की सभी प्रादेशिक भाषा–विभिन्नताएँ लुप्त हो गई और भारतीयों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से विचार–विनिमय करने की सुगमता प्राप्त हुई। इसी समय राजामोहन राय ने बंगाल में ब्रह्म समाज आंदोलन प्रारंभ किया, जिससे लोग देश और समाज के प्रति अपना कर्तव्य समझने लगे। राममोहन राय ने भारतीय परंपरा के सर्वोत्तम तत्वों का पाश्चात्य सर्वोत्तम तत्वों के साथ समन्वय कर एक बौद्धिक वातावरण का निर्माण किया।
ब्रह्म समाज तथा आर्य समाज ने बिहार में भी एक वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न कर दिया, जिसका महत्व समय के साथ–साथ निरन्तर बढ़ता गया। ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय मुस्लिम धर्म–ग्रन्थों का अध्ययन करने पटना आये थे। परन्तु बिहार में ब्रह्म समाज का जोरदार प्रसार 1868 ई० से शुरू हुआ, जब केशवचन्द्र सेन मुंगेर आये। ब्रह्म समाज के अनुयायियों ने पाश्चात्य शिक्षा पर भी जोर दिया, जिसके फलस्वरूप धीरे–धीरे बिहार में विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की स्थापना होने लगी।

पटना कॉलेज की स्थापना 1863 ई० में हुई तथा 1880 ई० के बाद भागलपुर में टी. एन. जे. कॉलेज, मुजफ्फरपुर में जी. बी. बी. कॉलेज, पटना में बी. एन. कॉलेज, आर. डी. एण्ड डी. जे. कॉलेज (मुंगेर) तथा सन्त कोलम्बस कॉलेज (हजारीबाग) खोले गये। श्रीमती अघोर कामिनी देवी ने पटना में 1891 ई0 में प्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना की। ब्रह्म समाज से प्रभावित होकर बिहार के कायस्थ तथा भूमिहार जाति के लोग सर्वप्रथम अंग्रेजी शिक्षा के संपर्क में आये, जिसके फलस्वरूप उनमें समाज–सुधार की भावना जगी। इस समय शाहाबाद जिले के मुंशी प्यारेलाल का समाज सुधार आंदोलन भी जोरों से चल रहा था। मुंशी प्यारेलाल ने तिलक दहेज की प्रथा का अंत करने के लिए सदर अंजुमन–ए–हिन्द नामक एक संस्था की स्थापना की थी, जिसकी शाखाएँ शाहाबाद, पटना, गया, सारण, चंपारण, मुजफ्फरपुर आदि स्थानों में स्थापित हो गई थी। यद्यपि इस संस्था में सभी जाति के सदस्य थे, फिर भी कायस्थों की संख्या सबसे अधिक थी। 1898 ई0 में बिहार में प्रथम भूमिहार सम्मेलन तथा 1889 ई0 में प्रथम कायस्थ सम्मेलन हुआ, जो समाज–सुधार की भावना से उत्प्रेरित था।

सच्चिदानंद सिन्हा ने फरवरी 1904 ई० के हिन्दुस्तान रिव्यू में एक लेख लिखा, जिसका शीर्षक था, 'दि पार्टिशन ऑफ दि लोअर प्रोविन्सेज : ऐन अलटरनेटिव प्रोपोजल' तथा इसी शीर्षक से दूसरा लेख अगस्त 1905 ई0 के हिन्दुस्तान रिव्यू में महेश नारायण ने लिखा। इन दोनों लेखों को मिलाकर जनवरी 1906 ई० में एक पुस्तक प्रकाशित की गई, जिसका नाम 'पार्टिशन ऑफ बंगाल' और 'सेपरेशन ऑफ बिहार' रखा गया। भारत तथा ब्रिटेन में इसका वृहद् पैमाने पर वितरण किया गया।

बिहारी नेताओं ने अपनी माँग स्वीकृत नहीं होने पर भी बंग–विभाजन के विरूद्ध चल रहे आंदोलन में भाग नहीं लिया, क्योंकि वे समझते थे कि वैसा करने पर उनकी माँग कमजोर पड़ जायेगी। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि जब सरकार उनकी माँग की उपयोगिता को समझ जायेगी, तब वह उसे स्वतः स्वीकृत कर लेगी।

बंगालियों द्वारा बिहारी नेताओं के स्वतंत्र सूबे की माँग की काफी आलोचना हुई तथा कुछ लोगों ने इसे व्यक्तिगत स्वार्थ समझा, जिससे बिहारियों को अधिक संख्या में नौकरी मिल सके।(1) फिर भी, बिहारी नेताओं ने अपनी भर्तसना तथा आलोचना की जरा भी परवाह नहीं की और हिन्दू मुसलमान कन्धे–से–कन्धा मिलाकर अपनी माँग पर अटल रहे।

इस समय कलकत्ता में पढ़नेवाले बिहारी छात्रों को भी अपनी हीनता का बोध हुआ और राजेन्द्र प्रसाद जो कलकत्ता के 'बिहारी क्लब' के मंत्री थे, के मन में एक बिहारी छात्र–सम्मेलन करने की बात उठी, जिससे बिहारी छात्रों में एकता की भावना जाग्रत हो सके। बिहारी क्लब ने इस प्रस्ताव का सहर्ष समर्थन किया। राजेन्द्र प्रसाद ने पटना आकर सच्चिदानंद सिन्हा, महेश नारायण तथा अन्य नेताओं के साथ इस प्रश्न पर विचार–विमर्श किया। सभी लोगों ने मुक्त–कण्ठ से इस काम में सहमति प्रदान की। फलतः 1906 ई0 में दशहरे की छुट्टी में पहल बिहारी छात्र–सम्मेलन पटना कॉलेज में पटना के प्रमुख बैरिस्टर शर्मुद्दीन के सभापतित्व में संपन्न हुआ।(2)

बिहारी छात्र–सम्मेलन में बिहार के सभी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के छात्र सम्मिलित हुए। पटना में छात्रों की एक स्थायी समिति बनाई गई, जिसमें संपूर्ण बिहार के छात्रों का प्रतिनिधित्व था। सम्मेलन में यह भी निश्चय किया कि बिहारी छात्र किसी भी राजनीतिक आंदोलन में भाग नहीं लेंगे, चाहे वह आंदोलन राष्ट्रवादी हो या राजभक्तिमूलक।(3)

इस प्रकार का छात्र संगठन बिहार के लिए तो नया था ही, भारत के किसी अन्य प्रान्त में भी इस प्रकार का छात्र–सम्मेलन पहले कभी नहीं हुआ था। राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में, "उस समय तक भारतवर्ष में कहीं भी दूसरा छात्र–सम्मेलन नहीं हुआ था। एक प्रकार से हमलोगों को एक नया संगठन, जिसका कोई नमूना सामने नहीं था, बनाना था। बिहार शिक्षा में बहुत पिछड़ा हुआ था। सार्वजनिक जीवन तो प्रायः नहीं के बराबर था। विशेषकर छात्र तो बाहर का कुछ जानते ही नहीं थे। कांग्रेस के पक्षपाती थोड़े ही लोग थे। अभी तक बिहार में कोई राजनीतिक संगठन भी अलग नहीं था, न बिहार की अलग कांग्रेस कमिटी थी और न बिहार राजनीतिक सम्मेलन की स्थापना हुई थी। यह पहला ही संगठन था, जिसमें सारे बिहार के लोग चाहे वे नव–वयस्क छात्र ही क्यों न हों, अलग–अलग एकत्र होकर अपने प्रश्नों पर विचार करने बैठे थे।(4) बिहारी छात्र–सम्मेलन ने बिहार में एक नया जागरण ला दिया और बिहारी विद्यार्थी जो अब तक असंगठित थे, एक मंच पर एकत्र हो गये। इस सम्मेलन ने सच्चिदानंद तथा महेश नारायण के सपनों को साकार बनाने में गति प्रदान की।

इस घोषणा से बिहारियों में नई चेतना का प्रादुर्भाव हुआ। 28 और 29 दिसम्बर, 1911 ई० को कलकत्ता में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, जहाँ एक प्रस्ताव पारित कर बिहार को एक नये प्रान्त का दर्जा देने के लिए सम्राट के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई। प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए तेज बहादुर सप्रू ने कहा कि हमें इसलिए खुशी नहीं है कि बिहार को एक अपना प्रान्त मिला, बल्कि इसलिए खुशी है कि बिहार को कार्यकारिणी परिषद् तथा विधान परिषद् का भी लाभ मिला। परमेश्वर लाल ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।(5) परिणामतः 1 अप्रैल 1912 ई० को बिहार प्रान्त का विधिवत् उद्घाटन हुआ, जिसकी राजधानी पटना बनी। बिहार प्रान्त का बनना क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और आधुनिक शिक्षा के विस्तार अर्थात् विकास से ही संभव हुआ जो आज बिहार एक आजाद राज्य है। क्रांतिकारी आंदोलन के क्रम में ही आधुनिक शिक्षा के विस्तार के फलस्वरूप ही हमारे राष्ट्र की स्वतंत्रता प्राप्त हुई जिसमें राष्ट्रवादियों की अहम भूमिका है।

आधुनिक शिक्षा का सबसे गंभीर प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर पड़ा है। भारत में हिन्दू और मुस्लिम काल में भी शिक्षा थी, परन्तु उस शिक्षा का आधार प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन था और वह बहुत कुछ विश्वास पर आधारित थी। आधुनिक शिक्षा की सबसे बड़ी देन तार्किक बुद्धि का विकास है। प्राचीन विचारों, सिद्धांतों और परंपराओं को तर्क के आधार पर देखना, भारतीयों ने इस शिक्षा के प्रभाव से आरंभ किया। क्या अच्छा है और क्या बुरा है, इसका निर्णय विश्वास पर नहीं बल्कि तर्क के आधार पर किया जाने लगा। यही भावना भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन को आरंभ करनेवाली थी और यही भावना विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक आदि के जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तनों का कारण बनी। यह भावना भारतीयों के बौद्धिक विकास का आधार बनी जिससे 19वीं और 20वीं सदी के आधुनिक भारत का निर्माण हुआ। 1830 ई0 में 'संवाद कौमुदी' नामक पत्रिका में लिखा गया था कि "यह सत्य है कि हिन्दू और मुस्लिम काल में भी इस देश में ज्ञान प्राप्त किया गया था लेकिन जिस प्रकार की उपयोगी शिक्षा की व्यवस्था हमें अंग्रेजी शासनकाल में मिलती है, वह सर्वथा अपरिचित थी।" उस समय से एक सदी से अधिक समय निकल चुका है। यह सिर्फ अनुमान ही किया जा कसता है कि इन 100 वर्षों से भी अधिक समय की आधुनिक शिक्षा ने भारतीयों को कितना लाभ पहुँचाया है।

19वीं सदी के धार्मिक और सामाजिक आंदोलन भारत में आधुनिक शिक्षा के आरंभ किये जाने के कारण ही थे। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद आदि सभी ऐसे भारतीय धार्मिक और सामाजिक सुधारक थे जिन्होंने भारतीय वेदों, धर्मग्रंथों और हिन्दू संस्कृति को अपने विचारों का आधार बनाया था परन्तु इसमें संदेह नहीं कि तर्क समानता और असमानता, सामाजिक कुरीतियों से घृणा, स्त्री शिक्षा और समानता, जाति प्रथा का विरोध और मानवता का संदेश आदि की उनकी विचारधारा को कुरेदने के कार्य पाश्चात्य शिक्षा ने प्रदान किया। राजा राममोहन राय अंग्रेजी भाषा, विचार और संस्कृति से परिचित थे और स्वामी

विवेकानंद भी आधुनिक शिक्षा प्राप्त स्नातक थे। भारत में धर्म सुधार आधुनिक शिक्षा के कारण आरंभ हुआ और धर्म को कर्मकांड, दुराचार और सामाजिक कुरीतियों से दूर करने का श्रेय आधुनिक शिक्षा को है। आधुनिक समय में भी धर्म को सरल, उचित दुराचार रहित और अंधविश्वास से बचाने का प्रयत्न भी आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही करते हैं न कि प्राचीन शिक्षा परंपराओं के समर्थक।[6]

आधुनिक शिक्षा ने भारतीय समाज की अनेक कुरीतियों को दूर करने में बड़ी सहायता दी। सती प्रथा, बाल–विवाह, बहु–विवाह, बाल हत्या, अल्पायु विवाह, शिशु–बलि जैसी अनेक अमानवीय कुरीतियों को समाप्त करने का श्रेय आधुनिक शिक्षा को है। विधवा–विवाह, स्त्री–शिक्षा, जाति–प्रथा का विरोध, अस्पृश्यता का विनाश आदि जैसे सुधार भी आधुनिक शिक्षा के प्रभाव के कारण है। नवीन शिक्षा से प्राप्त नवीन आर्थिक–व्यवस्था भी अनेक सामाजिक कुरीतियों पर कठोर आक्रमण कर रही थी। समाज को इन अमानवीय कुरीतियों से बचाने और मनुष्य को मनुष्य स्वीकार किये जाने की भावना को प्रोत्साहन देने का श्रेय आधुनिक शिक्षा को है।[7]

आधुनिक अर्थव्यवस्था का आधार आधुनिक शिक्षा है। आधुनिक शिक्षा धर्म और साहित्य की शिक्षा तक ही सीमित नहीं है। आधुनिक शिक्षा में भौतिक विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, इंजीनियरिंग और सामाजिक शास्त्रों में मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान जैसे नवीन विषय सम्मिलित हैं। इस कारण इस शिक्षा से न केवल विज्ञान का सहारा लेकर विभिन्न उद्योगों, मशीनों और उत्पादन के विभिन्न साधनों का ही निर्माण किया गया है बल्कि अन्य भी विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को जन्म दिया गया है। गाँवों तक में खेती के नवीन यंत्र और सिंचाई के नवीन तरीके पहुँच गये हैं। फिर उद्योगों के बारे में तो कहा ही क्या जा सकता है? जीवनोपयोगी अनेक नवीन वस्तुओं का उत्पादन हुआ है और संपूर्ण भारत का आर्थिक ढाँचा बदल गया है और बदलता जा रहा है। यह सभी कुछ आधुनिक शिक्षा प्रणाली के कारण है।

विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य का निर्माण भी आधुनिक शिक्षा और नवीन पद्धति के कारण है। इस कारण केवल यही नहीं है कि आधुनिक समय में शिक्षा सार्वजनिक रूप से दी जाती है। बल्कि यह भी है कि इस शिक्षा पद्धति के द्वारा ज्ञान का प्रचार सरलता से संभव है। देखा जाय तो प्रायः सभी भारतीय भाषाओं के निर्माण का आरंभ अंग्रेजी शासनकाल से आरंभ हुआ है। ललित कलाओं के क्षेत्र में भी आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है।। भारतीय परंपरा के अनुसार कलाओं के विकास का आधार शिक्षा पद्धति न थी बल्कि विभिन्न व्यक्ति हुआ करते थे। विद्यार्थी विभिन्न कलाकार गुरूओं से कला की शिक्षा प्राप्त करते थे और कला पर केवल कुछ व्यक्तियों का एकाधिकार था। आधुनिक शिक्षा पद्धति के अनुसार ललितकलाओं के स्कूल और विद्यालय स्थापित किये गये है और उनके द्वारा स्थापत्य कला, चित्रकला, मूर्तिकला, गान विद्या और नृत्यकला की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गयी है। इसके साथ–साथ प्राचीन कला के नमूनों और प्राचीन कला की पद्धतियों को भी खोजने का प्रयत्न किया गया है। इन सभी कार्यों से विभिन्न भारतीय ललित कलाओं की उन्नति में सहायता प्राप्त हुई है।[8]

आधुनिक शिक्षा ने भारत की राष्ट्रीयता के निर्माण, राजनीतिक विचारों और राजनीतिक आंदोलन को प्रभावित किया। राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, समानता, जनतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद आदि सभी प्रकार की विचारधारा, आधुनिक शिक्षा की देन है। निःस्संदेह, अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य देशों से संपर्क ने भी इन विचारों को प्रोत्साहन दिया है परन्तु इन विचारों को स्थायी स्वरूप प्रदान करने का श्रेय आधुनिक शिक्षा को है। भारत की स्वतंत्रता का राजनीतिक आंदोलन भी बहुत कुछ आधुनिक शिक्षा के प्रभाव की परिणति था। हमारे राजनीतिक आंदोलन का नेतृत्व अधिकांशतः उन्हीं व्यक्तियों ने किया जो आधुनिक शिक्षा प्राप्त थे। शिक्षित विद्यार्थी और अध्यापक वर्ग ने भी राजनीतिक आंदोलन में महत्वपूर्ण भाग लिया था। उसके पश्चात् भी संवैधानिक शासन, जनतंत्र व्यवस्था, स्थानीय स्वशासन अधिकार और कर्तव्य आदि सभी की शिक्षा हमें आधुनिक शिक्षा और शिक्षा पद्धति से प्राप्त होती है।[9]

इस प्रकार देखा जाय जो भारत के नव जागरण में आधुनिक शिक्षा और शिक्षा पद्धति ने महत्वपूर्ण भाग लिया है। धर्म, समाज, अर्थव्यवस्था, कृषि, उद्योग व्यवस्था, राजनीतिक साहित्य आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में जागृति और उन्नति आधुनिक शिक्षा के कारण है। इस प्रकार आधुनिक भारत के निर्माण में नवीन शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग रहा है। परन्तु अब इस शिक्षा और शिक्षा पद्धति में विभिन्न दोष बताये गये है और इसमें सुधार की तीव्र आवश्यकता है। दुःख की बात यह है कि विभिन्न शिक्षा आयोगों के सुझावों के पश्चात् भी इस पद्धति में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सका है। इस क्षेत्र में एक आवश्यकता राष्ट्रभाषा को व्यावहारिक दृष्टि से राष्ट्रभाषा का पद प्रदान की है जिसके अभाव में राष्ट्रीय व्यक्तित्व का निर्माण संभव नहीं है। द्वितीय आवश्यकता विश्वविद्यालयों की शिक्षा को सीमित करके माध्यमिक स्तर तक शिक्षा को अनिवार्य बनाने की है। तीसरे शिक्षा का लक्ष्य संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास तथा उपयोगी नागरिकों का निर्माण होना चाहिए न कि केवल भाषा और कुछ विषयों का ज्ञान मात्र। इस संदर्भ में व्यावसायिक शिक्षक का नारा भी अर्थहीन है। शिक्षा का प्रथम लक्ष्य व्यक्ति को मानवीय गुणों से युक्त बनाने का होना चाहिए। विभिन्न विद्यार्थियों की रूचि के अनुकूल व्यावसायिक शिक्षा को व्यावहारिक रूप से शिक्षा का भाग बनाया जाना चाहिए, न कि शिक्षा का लक्ष्य। इस प्रकार, शिक्षा में सुधार किये जाने से ही आधुनिक शिक्षा भारतीय नवयुवकों के लिए उपयोगी बन सकती है।

निष्कर्ष

अतः बिहार का क्रांतिकारी संग्राम, राष्ट्रवाद और आधुनिक शिक्षा की उन्नति सभी उपनिवेशवाद विरोधी मुक्ति संग्रामों की ही तरह एक क्रांतिकारी आंदोलन का था। इस क्रांतिकारी आंदोलन को समझौतावादी ढंग से चलाने के कारण आंदोलन के चरित्र और उसको चलाने की रणनीति और कार्यनीति के बीच का अंतर्द्वन्द ही वह मूल कारक है कि आज भी बिहार अपने उस लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सका है जिसे बिहार मुक्ति संग्राम ने अपने सामने रखा था। यह विकृति तो इतनी बढ़ गई है कि आज नयी आर्थिक नीति के कारण फिर बिहार नव–उपनिवेशवादी शोषण के शिकंजे में जा रहा है और बिहार के लोग बुर्जुआ वर्ग साम्राज्यवाद से आज भी समझौता कर राज्य की सार्वभौमिकता तक को दाव पर लगा दिया है।

संदर्भ सूची

1ण सिन्हा, सच्चिदानंद, सम इमिनेट बिहार कण्टेम्पोरेरीज, पृ. 48.
2ण प्रसाद, राजेन्द्र, आत्मकथा, पृ. 54.
3ण उपरोक्त, पृ. 55.
4ण उपरोक्त.
5ण रिपोर्ट ऑफ दि इंडियन नेशनल कांग्रेस 1911, पृ. 47.
6ण प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, उत्तर प्रदेश, अगस्त 2001.
7ण टाईम्स ऑफ इंडिया, 11 दिसम्बर, 1945.
8ण चतुर्वेदी, आचार्य सीताराम, 'संस्कृत शिक्षण पद्धति' पुस्तक से उद्धृत।
9ण व्यास, जगदीश प्रसाद, भारत में अंग्रेजी शिक्षा का इतिहास एवं मनमोहन सहगल की पुस्तक भारतीय शिक्षा का इतिहास तथा आधुनिक शिक्षा का इतिहास से उद्धृत।